

# गुरुओं से ही पढ़ाई से डरने वाला बच्चा, शिक्षा के इस ऊंचे पद तक पहुंच पाया

मेरे जीवन में तीन ऐसे गुरु रहे हैं जिन्होंने मुझे बचपन से बदलने का काम किया। पहले- इस्माइल खान सर। बचपन में मैं पढ़ाई से डरता था, स्कूल जाने से रोता था, और तीसरी कक्षा तक फेल भी हुआ था। इस्माइल सर हर दिन हमारे घर आकर कई बच्चों को पढ़ाते थे, लेकिन मेरे साथ थोड़ा और सख्ती से। उन्होंने मुझे अनुशासन सिखाया, धीरे-धीरे स्कूल जाना शुरू किया और पढ़ाई में मन लगाना सीखा। दूसरी हैं इंदिरा मैडम। उन्होंने मुझे झाड़ा, डांटा, लेकिन सच्चे शिक्षक की तरह दिल से सुधार किया। उनके सख्त प्यार ने मुझे चौथी से सातवीं तक दिशा दी। तीसरे गुरु हैं वेंकटेश्वर राव सर। आठवीं से बारहवीं तक मैं रोज सुबह 5 बजे साइकल से उनके पास जाता था। वे सिर्फ पढ़ाते नहीं थे, बल्कि सिखाते थे।



रामकुमार काकाणी, निदेशक,  
आईआईएम रायपुर

कि सीखकर दूसरों को भी सिखाना चाहिए। उन्होंने मुझसे कहा- तुमने हल कर लिया, अब दूसरों को समझाओ। इन्हीं गुरुजनों की वजह से मैं पढ़ाई से डरने वाला बच्चा, एक दिन शिक्षा के इस ऊंचे पद तक पहुंच पाया। ये केवल गुरु नहीं, मेरे जीवन की नींव हैं।